

आरती श्री गायत्री जी की ।
आरती श्री गायत्री जी की,
ज्ज्ञान दीप और श्श्रद्धा की बाती
सो भक्ता ही पूरता करै जहं घी की ।
आरती श्री गायत्री जी की ।
मानस की शुची थाल के ऊपर
देवी की ज्योता जगै, जहं नकी।
आरती श्री गायत्री जी की ।
शुद्ध मनोरथ के जहां घण्टा,
बाजै करै पूरी आसहु ही की ।
आरती श्री गायत्री जी की ।
जाके समक्ष हमें तहुि लोक कै
गद्धी मलै तबहूं लगे फीकी।
आरती श्री गायत्री जी की ।
संकट आवै न पास कबौ तनिहे
सम्पदा औ सुख की बनै लकी।
आरती श्री गायत्री जी की ।
आरती प्रेम सो नेम सों करि
ध्यावहा भूरता ब्रम्हा लली की ।
आरती श्री गायत्री जी की ।